अमेरिका में भारतीयता की अलख

आ नो भद्राः कृतवो यंतु विश्वतः।
अर्थात सद्विचारों का स्वागत है भले ही वे कहीं से भी आएं।

चित्र: एस. सत्य

गोविंद सिंह

भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में जुटे न्यूयॉर्क के भारतीय विद्या भवन ने मनाई अपनी रजत जयंती।

उस समय पश्चिमी देशों में भारत की छवि साधु-संतों और बाजीगरों के देश के रूप में ही ज्यादा थी। भारतीय धर्म-दर्शन की तरफ पश्चिम की दिलचस्पी शुरू ही हुई थी। वक्त का तकाजा था कि देश-विदेश में भारत-भारतीयता को लेकर एक वैज्ञानिक समझ विकसित हो। इसी जरूरत को देखते हुए 1938 में भारतीय संस्कृति के विद्वान कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने महात्मा गांधी जी के आशीर्वाद से भारतीय विद्या भवन की स्थापना की। उनके मन में एक ऐसे भारत का सपना था, जिसकी जड़ें अपनी जमीन के भीतर हों और जिसे दुनिया के हर कोने से हवा-पानी मिल रहा हो। इस दिशा में काम शुरू करते हुए उन्होंने भारतीय संस्कृति और धर्म की विवेकसम्मत व्याख्या करने वाली पुस्तकें प्रकाशित करवाईं और इन पर आधारित शिक्षा के पठन-पाठन पर जोर दिया। वह चाहते थे कि भारतीय विद्या भवन एक ऐसा राष्ट्रीय स्मारक बने जो भारत की राष्ट्रीय संस्कृति को समृद्ध करे और दुनिया भर में फैलाए। वह इसमें किसी तरह का क्षेत्रवाद या संकीर्णतावाद नहीं चाहते थे।

जल्द ही भारतीय विद्या भवन भारत में ही नहीं, भारत से बाहर भी भारत और भारतीयता के झंडे गाड़ने वाली संस्थाओं में पहली पंक्ति में आ गया। इसी मकसद के तहत कन्हैयालाल मुंशी के निधन के बहुत बाद यानी 1981 में गांधी जयंती के दिन अमेरिका में भी भारतीय विद्या भवन की स्थापना हुई। मुंशी जी के बाद भारत के पूर्व वित्त मंत्री सी. सुब्रह्मण्यम और जयसुख लाल हाथी जैसे नेताओं ने विद्या भवन को नई दिशा दी। आठवें दशक में भवन के संचालकों को लगा कि आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की जननी समझी जाने वाली अमेरिकी धरती पर भवन का केंद्र होना जरूरी है। तब तक अमेरिका जाने वाले भारतीय युवाओं की बड़ी संख्या हो चुकी थी। यों भी भारत विद्या के प्रति अमेरिकियों की दिलचस्पी लगातार बढ़ रही थी। इस सोच को अंजाम दिया गया 1981 में जब संयुक्त राष्ट्र में अवर महासचिव सीवी नरसिंहन राव की अध्यक्षता में भवन के अमेरिकी केंद्र की स्थापना हो पाई। निस्संदेह इसकी स्थापना में भारत में अमेरिकी राजदूत रहे प्रो. रॉबर्ट गोहीन का सहयोग रहा। नरसिंहन राव के बाद 1983 में गोहीन को ही इसका अध्यक्ष बना दिया गया। आज भी वह अमेरिकी केंद्र के चेयरमैन हैं, जबकि भारतीय मूल के प्रवीण चंद गांधी अब भवन के अमेरिका केंद्र के अध्यक्ष हैं। हिंदी के उद्भट विद्वान डॉ. पी जयरामन को इसका कार्यकारी निदेशक बनाया गया। मूलतः तमिल भाषी डॉ. जयरामन इससे पहले रिजर्व बैंक में हिंदी विभागाध्यक्ष थे। वह अब तक अमेरिका में भवन की कमान बखूबी संभाले हुए हैं। हिंदुजा फाउंडेशन द्वारा दी गई क्वींस स्थित एक इमारत से भवन का आरंभिक कामकाज शुरू हुआ। वर्ष 1993 में यह न्यूयॉर्क शहर के मैनहट्टन इलाके में सेवंथ एवेन्यू में एक बहुमंजिला इमारत में चला गया।

अक्टूबर 2005 से एक साल के लिए अमेरिका में भारत-भारतीयता की अलख जगाए रखने वाले विद्या भवन की रजत जयंती मनाई जा रही है। जयरामन बताते हैं, आज जबकि अमेरिका में भवन की गतिविधियों की धूम है, जब हम पीछे मुड़ कर

साभार: भारतीय विद्या भवन

हैं।'' आज अमेरिका के अनेक शहरों में भवन की कक्षाएं चलती हैं। हिंदी सहित भारतीय भाषाओं की पढ़ाई होती है ताकि यहां के भारतवंशी अपनी जड़ों से जुड़े रह सकें। समय-समय पर भजन, शास्त्रीय व सुगम संगीत के आयोजन, गजल के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। कवि गोष्ठियां और मुशायरे होते हैं। धार्मिक ग्रंथों, महाकाव्यों और प्राचीन सांस्कृतिक मूल्यों को सिखाने की कोशिशें होती हैं। इन तमाम विषयों पर भवन अभी तक 1000 से अधिक पुस्तकें स्वयं भी प्रकाशित कर चुका है। साथ ही कुछ पत्रिकाएं भी हिंदी, गुजराती और अंग्रेजी में नियमित रूप से प्रकाशित हो रही हैं। लगभग हर केंद्र में भवन का पुस्तकालय इसका एक अतिरिक्त आकर्षण है। जयरामन के मुताबिक, ''अमेरिका में रह रहे भारतवंशियों के बच्चों और भारत में दिलचस्पी रखने वाले अमेरिकियों को भारत-भारतीयता के बारे में अच्छा साहित्य और ज्ञान प्राप्त हो, यही तो हम चाहते हैं। एक तरह से यह दोनों देशों को और निकट लाने की कवायद है।''

गगनांचल के संपादक कन्हैया लाल नंदन समापन समारोह में हिस्सा लेने न्यूयॉर्क गए थे। भवन के बारे में वह कहते हैं, ''आज भारतीय विद्या भवन न्यूयॉर्क, न्यू जर्सी, ब्रुकलिन, क्वींस, और जैक्सन हाइट्स के भारत प्रेमियों के लिए

ऊपर: भारतीय विद्या भवन की रजत जयंती के मौके पर लिंकन सेंटर के एलिस टुली हॉल में आयोजित गजल कन्सर्ट में गजल गायक जगजीत सिंह ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने यहां अपनी लगभग हर लोकप्रिय गजल गाई। इस अवसर पर हॉल दर्शकों से खचाखच भरा था।

दाएं: सुप्रसिद्ध गीतकार गुलजार का स्वागत करतीं भारत की वाणिज्यदूत सुश्री नीलम देव। साथ में हैं डॉ. नवीन मेहता, मेघना गुलजार और भारतीय विद्या भवन के कार्यकारी निदेशक डॉ. जयरामन।

देखते हैं तो वाकई सिर गर्व से ऊंचा हो जाता है। हमारे पास ढेर सारे शुभचिंतक, समर्थक, मित्र, दान दाता और स्वयंसेवक हैं, जो समय-समय पर भवन की गतिविधियों के लिए अपना अंशदान करते रहते हैं। इन 25 वर्षों में भवन ने सब के सहयोग से अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण वाली एक राष्ट्रीय छवि अर्जित की है।

देश से बाहर भवन का मकसद भारतीय संस्कृति, जीवन मूल्यों और दर्शन को लोकप्रिय बनाना है। जयरामन बताते हैं, ''हम विविध भारतीय कलाओं यथा संगीत, नृत्य, नाटक पेंटिंग और फिल्मों के जरिये यह काम करते सांस्कृतिक शिक्षा का केंद्र बन चुका है।'' पिछले 25 सालों में भवन ने जो चेतना पैदा की, उसकी परिणति सिल्वर जुबली समारोह के समापन में दिखाई दी।

अमेरिका में भवन के 25 साल पूरे होने पर गत वर्ष मई में भवन के रजत जयंती समारोह की शुरुआत हुई। साल भर अनेक कार्यक्रम रखे गए। भारतीय संस्कृति और दर्शन पर जयरामन के विद्वतापूर्ण भाषणों के अतिरिक्त भरत नाट्यम की महान नृत्यांगना व कलाक्षेत्र की संस्थापक रुक्मिणी देवी की याद में सांस्कृतिक कार्यक्रम और सुप्रसिद्ध कला समीक्षक सुनील कोठारी का व्याख्यान हुआ। क्विज मास्टर डेरेक ओ ब्रायन ने प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम किया। भारतवंशी अमेरिकी बच्चों से भारत की भाषा, संस्कृति और सामान्य ज्ञान पर सवाल पूछे। प्रख्यात गजल गायक जगजीत सिंह का गजल कन्सर्ट हुआ। कवि सम्मेलन व मुशायरा आयोजित किया गया और विभिन्न हस्तियों को उनके अपने-अपने क्षेत्र में योगदान के लिए सममानित किया गया। इस क्रम में अप्रैल के तीसरे सप्ताह में आयोजित समापन कार्यक्रम का विशेष महत्व है। भारत की साहित्य अकादेमी और विदेश मंत्रालय के भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद ने भी इस कार्यक्रम में शिरकत की। लिंकन सेंटर के एलिस टुली हॉल में आयोजित गजल कन्सर्ट में हॉल दर्शकों से खचाखच भरा था। उन्होंने अपनी लगभग हर लोकप्रिय गजल वहां गाई और दर्शकों को मंत्रमुग्ध करके रखा। कुछ स्थानीय गायकों ने भी उनका साथ दिया। सुप्रसिद्ध गीतकार गुलजार ने इस समारोह की अध्यक्षता की। दूसरी संध्या को कवि सम्मेलन व मुशायरा रखा गया। इसकी अध्यक्षता भारतीय योजना आयोग के उपाध्यक्ष मोंटेक सिंह अहलूवालिया ने की, जबकि मुख्य अतिथि थे साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष गोपीचंद नारंग। भाग लेने वाले कवि थे, मुंबई से विश्वनाथ सचदेव, शीन काफ निजाम, दिल्ली से कन्हैया लाल नंदन, गुलजार और अनूप भार्गव और विजय कुमार मेहता। अंतिम दिन पियरे होटल में आयोजित रात्रिभोज के दौरान गुलजार और जगजीत सिंह को आजीवन योगदान के लिए सम्मानित किया गया। साथ ही अमेरिका में रह रहे अनेक हिंदी सेवियों को भी सम्मानित किया गया। न्यूयॉर्क स्थित भारतीय वाणिज्य दूत नीलम देव ने इस अवसर पर भारत और अमेरिका के बीच सांस्कृतिक रिश्ते सुधारने के लिए भारतीय विद्या भवन की सराहना की तो हिंदुजा बंधुओं ने भी भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को विश्व के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए भवन को बधाई दी। □

***गोविंद सिंह** हिंदी दैनिक अमर उजाला में सहयोगी संपादक हैं।*